Raahe Khuda Me Pyari Cheez Dena (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 442
Weekly Booklet : 442

राहे ख़ुदा में प्यारी चीज़ देना

(अमीरे अहले सुन्नत का बयान)

(सफ़्हात : 13)

- अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का उ़म्दा ऊंट 02
- पसन्दीदा बाग़ अल्लाह की राह में दे दिया 08
- झुकी हुई मिस्वाक 09
- मदीने की मछली 11

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی خَاتَمِ النَّبِیّٖن ط
اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ ط بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ط

राहे ख़ुदा में प्यारी चीज़ देना[1]

दुआए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 13 सफ़ह़ात का रिसाला : "राहे ख़ुदा में प्यारी चीज़ देना" पढ़ या सुन ले उस के रिज़्क़ में बरकत दे और उसे अपनी राह में ख़ुश दिली से अपनी प्यारी चीज़ देने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा कर मां बाप और ख़ानदान समेत बे ह़िसाब बख़्श दे। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللّٰہُ علیہِ واٰلہٖ وسلّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने किसी किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा जब तक मेरा नाम उस किताब में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते रहेंगे। (معجم اوسط، 1/497، حدیث:1835)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! आ़म त़ौर पर हमारी येही आ़दत है कि हम अल्लाह पाक की राह में अपना बचा खुचा माल देते हैं मसलन खाना खा लिया और अब इस की ज़रूरत न रही तो बचा हुवा खाना किसी ग़रीब को दे देते हैं, इसी त़रह़ घर में कोई चीज़ रखी हुई है और वोह हमारे काम की न रही तो उसे किसी मस्जिद या मद्रसे में दे देते हैं, यूंही शादी वग़ैरा किसी तक़रीब का सिल्सिला हुवा

1... येह बयान शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ ने 22 रबीउ़स्सानी 1411 हि. ब मुत़ाबिक़ 10 नवम्बर 1990 ई. को दावते इस्लामी के मदनी मर्कज़ जामेअ़ मस्जिद गुल्ज़ारे ह़बीब में आ़शिक़ाने रसूल के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में फ़रमाया था, जिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या के शोबे "बयानाते अमीरे अहले सुन्नत" ने मुरत्तब किया है।

और मेहमानों के लिये ख़ूब खाना पकाया गया, अब इत्तिफ़ाक़ से कोई ह़ादिसा या बारिश हो गई जिस की वज्ह से लोग कम आए और दो चार देगें बच गईं तो अब वोह बची हुई देगें यतीम ख़ाने या अस्पताल में दे आते हैं, यूं हमारे यहां आ़म त़ौर पर येही त़रीक़ए कार है कि हम अल्लाह पाक की राह में वोही चीज़ दिया करते हैं जो हमारे काम की नहीं होती। इस के बरअ़क्स हमारे अस्लाफ़ अपनी बची खुची नहीं बल्कि सब से उ़म्दा, पसन्दीदा और काम में आने वाली चीज़ें अल्लाह पाक की राह में ख़र्च किया करते थे। बत़ौरे तरग़ीब इस ज़िम्न में एक ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़ पेशे ख़िदमत है :

अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का उ़म्दा ऊंट

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ मदीना शरीफ़ की एक क़रीबी बस्ती में रहा करते थे, गुज़र बसर के लिये आप के पास चन्द ऊंट और एक कमज़ोर सा चरवाहा था। एक बार ख़ानदाने बनू सुलैम के एक साह़िब ने आप की ख़िदमत में अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! अगर आप इजाज़त दें तो मैं आप की सोह़बत में रह कर आप से फ़ैज़ भी ह़ासिल करूंगा और आप के चरवाहे का साथ भी दूंगा, सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया : अगर तुम मेरे साथ रहना चाहते हो तो तुम्हें मेरी इत़ाअ़त करनी होगी, अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! किस बात में इत़ाअ़त ? इरशाद फ़रमाया : "जब मैं अपने माल में से कोई चीज़ राहे ख़ुदा में देने का कहूं तो सब से बेहतरीन चीज़ देनी होगी।" उस ने इस शर्त को मन्ज़ूर कर लिया और आप की ख़िदमत में रहने लगा। एक दिन किसी ने सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से अ़र्ज़ की : यहां नदी के किनारे कुछ ग़रीब लोग आबाद हैं हो सके तो आप इन की इम्दाद कर दीजिये, आप ने क़बीलए बनू सुलैम के उस शख़्स को जो आप की ख़िदमत में रहता था बुलाया और फ़रमाया : "एक ऊंट ले आओ"। वोह ऊंटों की जगह पहुंचा और

सब से उ़म्दा ऊंट मुन्तख़ब किया लेकिन फिर सोचा कि येह ऊंट सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की सुवारी के लिये कारआमद भी है और फ़रमां बरदार भी, मक़्सूद तो सिर्फ़ गोश्त तक़्सीम करना है लिहाज़ा इस के बदले इस के बाद के दर्जे की उ़म्दा ऊंटनी पेश कर दी, सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने जब वोह ऊंटनी देखी तो उन साह़िब से फ़रमाया : "तुम ने ख़ियानत की"। वोह फ़ौरन समझ गया और उसी ऊंट को जो सब से बेहतरीन था ज़ब्ह़ के लिये पेश कर दिया, सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने उस से इरशाद फ़रमाया : नदी के किनारे जितने घर आबाद हैं सब की गिनती कर लो और मेरा घर भी इस में शामिल कर लो, फिर ऊंट को ज़ब्ह़ कर के सब घरों में बराबर बराबर गोश्त पहुंचा दो और मेरे घर में दूसरों के मुक़ाबले में कोई बोटी भी ज़ाइद न जाने पाए इस का ख़याल रखो।

जब ऊंट का गोश्त तक़्सीम कर दिया गया तो सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने उस शख़्स को अपने पास बुलाया और पूछा : तुम्हारे और हमारे दरमियान अल्लाह पाक की राह में उ़म्दा माल ख़र्च करने की जो शर्त़ त़ै की गई थी क्या तुम उसे भूल गए थे ? उस ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! मैं भूला नहीं था बल्कि मुझे याद था और मैं ने पहले उसी उ़म्दा ऊंट को मुन्तख़ब किया था लेकिन फिर सोचा कि येह आप की सुवारी का है और बहुत कारआमद भी लिहाज़ा मह़ज़ आप की ज़रूरत के पेशे नज़र उसे छोड़ दिया था, सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने उन से फ़रमाया : क्या वाक़ेई़ तुम ने सिर्फ़ मेरी ज़रूरत की ख़ात़िर उस ऊंट को छोड़ दिया था ? अ़र्ज़ की : जी हुज़ूर ! वाक़ेई़ आप की ज़रूरत की ख़ात़िर उस ऊंट को छोड़ दिया था, इस के इ़लावा कोई और मक़्सद न था। सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें अपनी ज़रूरत का दिन न बता दूं ? सुनो ! मेरी ज़रूरत और ह़ाजत का तो वोह दिन है जिस दिन मुझे क़ब्र के गढ़े में अकेला दफ़्न कर दिया

जाएगा, बाक़ी रहा माल, तो उस के तीन ह़िस्सेदार हैं : ﴾1﴿ "तक़दीर" जो माल ले जाने में किसी का लिह़ाज़ नहीं करती ﴾2﴿ "वारिस" जो तेरे मरने का मुन्तज़िर रहता है कि कब तू मरे और वोह तेरे माल पर क़ब्ज़ा कर ले ﴾3﴿ तीसरा ह़िस्सेदार तू ख़ुद है (जब तक़दीर और वारिस माल लेने के मुआ़मले में कोई रिआ़यत नहीं करते तो तू अपना ह़िस्सा लेने में क्यूं पीछे रहता है ? जितना बन पड़े उ़म्दा से उ़म्दा तरीन माल राहे ख़ुदा में दे कर अपनी आख़िरत के लिये जम्अ़ कर ले।) येह फ़रमा कर आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने चौथे पारे की इब्तिदाई आयते मुबारका की तिलावत की : ﴿ لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ ﴾ (پ4،اٰلِ عمرٰن:92) तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "तुम हरगिज़ भलाई को न पहुंचोगे जब तक राहे ख़ुदा में अपनी प्यारी चीज़ न ख़र्च करो।" और फ़रमाया कि इसी लिये जो माल मुझे सब से ज़ियादा पसन्द होता है उस को राहे ख़ुदा में ख़र्च कर के अपनी आख़िरत के लिये ज़ख़ीरा करता हूं।

(تفسیر در منثور،پ4،اٰلِ عمرٰن، تحت الآیۃ:92، 2/261)

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की कितनी ज़बरदस्त दीनी सोच थी कि जो माल सब से ज़ियादा पसन्द होता उसे राहे ख़ुदा में ख़र्च कर के अपनी आख़िरत के लिये ज़ख़ीरा कर लिया करते थे। ऐ काश ! हमारी आंखें खुल जाएं और हम भी इस आयते मुबारका ﴿ لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ ﴾ (پ4،اٰلِ عمرٰن:92) तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "तुम हरगिज़ भलाई को न पहुंचोगे जब तक राहे ख़ुदा में अपनी प्यारी चीज़ न ख़र्च करो।" पर ग़ौर करने वाले बन जाएं। याद रखिये ! राहे ख़ुदा में जैसी चीज़ देंगे वैसा अज्र पाएंगे कि दुनिया आख़िरत की खेती है जैसी बोएंगे वैसी काटेंगे। (فیض القدیر، 3/728، تحت الحدیث:4273 ملخصًا) अफ़सोस ! हमारी सोच येह है कि हम शादी बियाह के मौक़अ़ पर पहले ख़ुद खाते हैं और फिर बचा हुवा खाना मुलाज़िमीन, ग़रीब पड़ोसियों, यतीम ख़ानों और मद्रसों में दे आते हैं।

होना तो येह चाहिये कि जहां हम शादी पर लाखों रुपिये ख़र्च करते हैं वहां कम अज़ कम एक देग इस निय्यत से पकवाएं कि उसे सिर्फ़ महल्ले के ग़रीब लोगों तक पहुंचाएंगे।

पहली नसीहत

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने अपनी ख़िदमत में रहने वाले शख़्स को तीन बातें इरशाद फ़रमाईं, जिन में से पहली बात येह थी कि "तक़दीर माल ले जाने में किसी का लिहाज़ नहीं करती।" वाक़ेई ऐसा ही है कि तक़्दीर जब चाहती है तो बड़ी फ़राख़ दिली के साथ किसी का माल ले लेती है और यूं देखते ही देखते लोगों की करोड़ों बल्कि अरबों रुपों की "कम्पनियों" को जला कर राख कर देती है। तक़्दीर न अमीरो ग़रीब का लिहाज़ करती है और न ही मौक़अ़ महल देखती है, वोह अपना पूरा पूरा हि़स्सा लेती है, तक़्दीर जब ग़ालिब आती है तो हंसता खेलता नौजवान आन की आन में मौत का शिकार हो जाता है, माज़ी में कई ऐसे नौजवान देखे गए हैं कि जिन को मां बाप इस लिये दावते इस्लामी के सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त में नहीं आने देते थे कि कहीं वोह मौलवी न बन जाएं और दीनदार न हो जाएं, आह ! बेचारे भरपूर जवानी के अ़ालम में इन्तिक़ाल कर गए।

दूसरी नसीहत

सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने अपनी ख़िदमत में रहने वाले शख़्स से दूसरी बात येह इरशाद फ़रमाई कि तेरे माल का दूसरा हि़स्सेदार "वारिस" है जो तेरे मरने का मुन्तज़िर रहता है कि कब तू मरे और वोह तेरे माल पर क़ब्ज़ा कर ले। वाक़ेई आज कल येह देखने में आ रहा है कि वारिसीन इस बात का इन्तिज़ार कर रहे

होते हैं कि जैसे ही बूढ़े वालिदैन दम तोड़ेंगे हम उन के मालो अस्बाब पर क़ब्ज़ा कर लेंगे, बन्दा सारी ज़िन्दगी माल जमा करता रहता है लेकिन उसे पता नहीं होता कि उस के इन्तिक़ाल के बाद वारिसीन उस के माल के साथ क्या सुलूक करेंगे ? बाज़ औक़ात तो वारिसीन मय्यित के माल से नाजाइज़ कारोबार भी शुरूअ़ कर देते हैं चुनान्चे :

एक साहिब का बड़ा मज़हबी ज़ेहन था और वोह आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तन्ज़ीम दावते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत भी करते थे, उन्हों ने इन्तिक़ाल से पहले एक दुकान ख़रीदी और फिर कुछ अ़र्से बाद बहुत सख़्त बीमार हो कर मौत का शिकार हो गए। उन के इन्तिक़ाल के बाद उन के चन्द वारिसों ने उन के छोड़े हुए माल से उस दुकान में फ़िल्मों ड्रामों और गाने बाजों की वीडियो कैसिटें बेचना शुरूअ़ कर दीं ह़ालांकि इन्तिक़ाल करने वाले साहिब ह़लाल रोज़ी कमाते थे और ह़राम रोज़ी से बहुत बचा करते थे।

बहर ह़ाल मरने वाला जो माल छोड़ कर जाएगा वोह वारिसों का है, वोह उस के साथ जैसा भी सुलूक करें उन की मर्ज़ी है, अगर मरने वाले ने अपने वारिसों की सह़ीह़ तरबियत न की हो तो बहुत मुश्किल है कि वोह उसे सह़ीह़ जगह इस्तिमाल करें बल्कि वोह माल उन के लिये गुनाहों पर मददगार साबित हो सकता है, येही वज्ह है कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ की ख़िदमत में मस्लमा बिन अ़ब्दुल मलिक ने ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : ह़ुज़ूर ! आप अपनी औलाद के मुआ़मले में मुझे और दीगर लोगों को वसिय्यत कर जाएं ताकि हम लोग आप के बाद उन के गुज़र बसर का इन्तिज़ाम कर सकें, येह सुन कर आप رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने इरशाद फ़रमाया : उ़मर की औलाद में दो ही क़िस्म के आदमी हो सकते हैं : नेक या बद, अगर वोह नेक हैं तो मुझे उन की फ़िक्र की ज़रूरत नहीं क्यूंकि

अल्लाह पाक ख़ुद ही उन्हें मुस्तग़नी कर देगा और अगर वोह बद हैं तो मैं क्यूं उन्हें माल दे कर अल्लाह पाक की ना फ़रमानी पर उन की मदद करूं।

(مکاشفۃ القلوب، ص143 ملخصاً)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! राहे ख़ुदा में माल ख़र्च करना हो या फ़ुज़ूल कामों में, माल ख़र्च करने के मुआमले में आम तौर पर बूढ़ों के मुक़ाबले में नौजवानों का दिल ज़ियादा खुला होता है लिहाज़ा अगर बाप मज़हबी ज़ेहन का न हो और उस ने औलाद की दुरुस्त तरीक़े पर तरबियत न की हो तो उस के इन्तिक़ाल के बाद औलाद गुनाहों में ख़ूब माल उड़ाती है, अगर बाप बहुत ज़ियादा सर्मायादार हो और बूढ़ा भी हो गया हो तो ग़ैर तरबियत याफ़्ता औलाद बज़ाहिर "अब्बू, अब्बू" करती है लेकिन हक़ीक़त में वोह इस बात का इन्तिज़ार कर रही होती है कि कब "अब्बूजान" हमारे रास्ते से हटें और फिर हम खुल कर रंग रलियां मनाएं क्यूंकि "अब्बूजान" बहुत कन्जूस हैं, वोह हमारी अय्याशियों में आड़े आते हैं।

तीसरी नसीहत

सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने अपनी ख़िदमत में रहने वाले शख़्स से तीसरी बात येह इरशाद फ़रमाई कि अपने माल का तीसरा हिस्सेदार तू ख़ुद है। (यानी जब तक़दीर और वारिस माल लेने के मुआमले में कोई रिआयत नहीं करते तो तू अपना हिस्सा लेने में क्यूं पीछे रहता है ? जितना बन पड़े उम्दा से उम्दा तरीन माल राहे ख़ुदा में दे कर अपनी आख़िरत के लिये जमा कर ले।)

ऐ आशिक़ाने रसूल ! सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की तरह दीगर सहाबए किराम भी ईसार के जज़्बे से मामूर थे। इस ज़िम्न में सय्यिदुना अबू तल्हा अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के ईसार का एक ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ पढ़िये और अपने लिये ईसार का ज़ख़ीरा इकठ्ठा कीजिये :

पसन्दीदा बाग़ अल्लाह की राह में दे दिया

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू त़ल्ह़ा अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में सब से ज़ियादा मालदार थे और सब से ज़ियादा बाग़ात भी आप ही के पास थे, आप के पास एक बहुत ही उ़म्दा बाग़ था जिस का नाम "बैरुह़ा" था, उस बाग़ का पानी बहुत मीठा था और उस बाग़ को येह शरफ़ भी ह़ासिल था कि प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस बाग़ में तशरीफ़ लाते और उस का पानी नोश फ़रमाते थे, फिर जब येह आयते मुबारका नाज़िल हुई : ﴿لَنۡ تَنَالُوا الۡبِرَّ حَتّٰی تُنۡفِقُوۡا مِمَّا تُحِبُّوۡنَ ۬ؕ﴾ (پ4، اٰل عمرٰن:92) तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "तुम हरगिज़ भलाई को न पहुंचोगे जब तक राहे ख़ुदा में अपनी प्यारी चीज़ न ख़र्च करो।" तो सय्यिदुना अबू त़ल्ह़ा अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे अपने तमाम बाग़ात में "बैरुह़ा" सब से ज़ियादा पसन्द है और अल्लाह पाक ने इरशाद फ़रमाया है कि अपनी पसन्द की चीज़ उस की राह में दी जाए तो मैं अपना सब से पसन्दीदा बाग़ "बैरुह़ा" अल्लाह पाक की राह में सदक़ा करना चाहता हूं। सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बहुत ख़ुश हुए और फ़रमाया कि उसे अपने अ़ज़ीज़ो अक़ारिब में तक़्सीम कर दो चुनान्चे सय्यिदुना अबू त़ल्ह़ा अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने वोह बाग़ अपने रिश्तेदारों में तक़्सीम कर दिया।

(بخاری، 1/493، حدیث:1461ملتقطاً)

ऐ आशिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत ! देखा आप ने ! सय्यिदुना अबू त़ल्ह़ा अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने एक आयते क़ुरआनी सुनी तो फ़ौरन अपना सब से पसन्दीदा बाग़ अल्लाह पाक की राह में सदक़ा कर दिया जब कि हम बार बार क़ुरआने पाक की आयात सुनने के बावुजूद उन पर अ़मल नहीं करते। ज़रा ग़ौर

कीजिये ! क्या कभी कोई आयते क़ुरआनी सुन कर हम पर असर हुवा ? मसलन येही आयते मुबारका (پ4،اٰلِ عمرٰن:92) ﴾لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ﴿ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "तुम हरगिज़ भलाई को न पहुंचोगे जब तक राहे ख़ुदा में अपनी प्यारी चीज़ न ख़र्च करो।" सुन कर हम पर असर हुवा कि हम ने अपनी पसन्दीदा चीज़ राहे ख़ुदा में सदक़ा कर दी हो मसलन अपनी पसन्दीदा घड़ी, रूमाल या पेन वग़ैरा राहे ख़ुदा में दिया ? याद रखिये ! किसी मिस्कीन या फ़क़ीर को देना ही अल्लाह पाक की राह में देना नहीं बल्कि अगर अपने किसी जानने वाले इस्लामी भाई को अपनी कोई पसन्दीदा चीज़ तोहफ़े में दी तो येह भी अल्लाह पाक की राह में देना ही हुवा और इस पर भी सवाब मिलेगा, सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان कितने ज़िन्दा दिल थे कि जहां क़ुरआने पाक की कोई आयते मुबारका या प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का कोई इरशाद सुनते तो फ़ौरन उस का असर उन के दिलों पर वारिद होता और वोह इस पर अ़मल करते, ज़रा सोचिये ! क्या कभी कोई आयते मुबारका या ह़दीसे पाक सुन कर हमारे दिल में भी उस पर फ़ौरन अ़मल करने का ख़याल आया ? शायद कभी नहीं आया होगा, अफ़सोस ! हम पर असर नहीं होता, हमारे दिल अब ज़िन्दा नहीं रहे और बद क़िस्मती से हमारी क़ुव्वते ईमानी बिल्कुल कमज़ोर हो चुकी है।

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! हमारे प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भी क्या ख़ूब ईसार फ़रमाया करते थे चुनान्चे

झुकी हुई मिस्वाक

एक बार प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सफ़र पर थे, आप ने दो मिस्वाकें ह़ासिल कीं जिन में से एक सीधी थी और दूसरी कुछ झुकी हुई, तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वोह सीधी मिस्वाक अपने साथी को अ़त़ा फ़रमा

दी और जो ख़मदार (यानी झुकी हुई) थी उसे अपने पास रख लिया, सहाबी ने अ़र्ज़ की : आप सीधी मिस्वाक रख लेते और मुझे झुकी हुई अ़ता फ़रमा देते, आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब दो मुसाफ़िर या दो मुसलमान कुछ वक़्त के लिये भी साथ रहते हैं और उस वक़्त में वोह एक दूसरे के साथ जैसा बरताव करते हैं तो क़ियामत के दिन उस के बारे में भी पूछा जाएगा। (احیاء العلوم، 2/218 ملخصاً)

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! ग़ौर कीजिये ! अपने साथी के साथ हमारा बरताव कैसा होता है ? दूसरों के हुक़ूक़ का ख़याल रखना तो दूर की बात है आज कल तो मां बाप के साथ भी बदतमीज़ी की जाती है। मां अगर कोई बात कहती है तो उस को फ़ौरन डांट दिया जाता है, बाप कुछ कहता है तो उसे टेढ़ा जवाब दिया जाता है और बहन भाई कुछ कहते हैं तो उन को झाड़ दिया जाता है, अगर घर में कोई बात करनी हो तो बग़ैर डांटे नहीं हो पाती और सख़्त रवय्या अपनाया जाता है मसलन येह काम क्यूं नहीं किया ? येह चीज़ इधर क्यूं पड़ी है ? यहां की सफ़ाई क्यूं नहीं की ? वग़ैरा वग़ैरा, जो नादान अपने घरों में ऐसा सख़्त रवय्या इख़्तियार करते हैं घर वाले उन से बदज़न हो जाते हैं।

ऐसा नौजवान जिस की घर में लड़ने झगड़ने और बद अख़्लाक़ी का मुज़ाहरा करने की आ़दत हो अगर इत्तिफ़ाक़ से आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तन्ज़ीम दावते इस्लामी के दीनी माह़ौल से वाबस्ता हो जाए, चेहरे पर सुन्नत के मुताबिक़ दाढ़ी रख ले और सर पर इमामा शरीफ़ सजा ले लेकिन उस के बावुजूद वोह घर वालों से सख़्त रवय्या अपनाए तो घर वाले दावते इस्लामी के दीनी माह़ौल को तन्क़ीद का निशाना बनाना शुरूअ़ कर देते हैं। याद रखिये ! दावते इस्लामी के दीनी माह़ौल से वाबस्ता होते ही यकदम सारी ख़राबियां दूर नहीं हो जातीं बल्कि आहिस्ता आहिस्ता दूर होती हैं।

अगर कोई दावते इस्लामी को तन्क़ीद का निशाना बनाए तो उस से लड़ने झगड़ने के बजाए अपनी ख़ामियां दूर करनी चाहियें और तन्क़ीद करने वालों से कहना चाहिये कि अगर हमारी ख़ामियों की वज्ह से आप को तक्लीफ़ पहुंची है तो हमें मुआफ़ कर दीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه आइन्दा तक्लीफ़ नहीं पहुंचेगी। जो इस्लामी भाई दावते इस्लामी पर तन्क़ीद करने वालों को धम्कियां देते हैं मसलन हम ऐसा कर देंगे या वैसा कर देंगे, अगर घर के अफ़राद में से कोई दावते इस्लामी को बुरा भला कहे तो उन्हें इस त़रह़ डराते हैं कि हम घर से भाग जाएंगे या घर के बरतन तोड़ देंगे वग़ैरा वग़ैरा तो ऐसों को ह़िक्मते अ़मली और अ़क़्लमन्दी से काम लेना चाहिये और धम्की आमेज़ लहजा इख़्तियार करने के बजाए तन्क़ीद करने वालों को प्यार व मह़ब्बत से समझाना चाहिये। देखिये ! जब तक लोगों के सामने हमारा अच्छा किरदार उभर कर नहीं आएगा और आप नफ़रतें मिटा कर मह़ब्बत की शम्ए रौशन नहीं करेंगे तब तक उजाला नहीं होगा बल्कि अन्धेरे का अन्धेरा ही रहेगा लिहाज़ा ज़ाहिरो बात़िन दोनों की इस्लाह़ ज़रूरी है।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मश्हूर सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا भी ख़ूब ईसार किया करते थे, चुनान्चे

मदीने की मछली

एक मरतबा सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا बीमार हुए तो सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ से फ़रमाया : मुझे भुनी हुई मछली खाने की ख़्वाहिश है, उन दिनों मदीनए मुनव्वरा में मछली दस्तयाब नहीं थी, ह़ज़रते नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ ने बहुत तलाश की तो आख़िरकार डेढ़ दिरहम की एक मछली मिल गई, ह़ज़रते नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ फ़रमाते हैं : मैं ने भून कर सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا की बारगाह में ह़ाज़िर कर दी, इतने में एक फ़क़ीर आ गया तो आप

رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने फ़रमाया : येह मछली उस को दे दो, मैं ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! बड़ी मुश्किल से ढूंड कर लाया हूं और आप की ख़्वाहिश भी है लिहाज़ा मैं इस मछली की रक़म उस फ़क़ीर को दे देता हूं, आप ने फ़रमाया : नहीं उस को येह मछली दे दो चुनान्चे मछली उठा कर उस को दे दी गई, वोह फ़क़ीर चला गया तो सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللہُ عَنْہ उस के पीछे गए और उस से डेढ़ दिरहम में ख़रीद ली और दोबारा ह़ाजिर कर दी, सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا ने पूछा : येह मछली वापस कैसे आ गई ? तो आप ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! मैं ने फ़क़ीर से डेढ़ दिरहम में ख़रीद ली है, आप رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا ने फ़रमाया : येह मछली भी उसी को दे आओ और डेढ़ दिरहम भी उस के पास ही रहने दो क्यूंकि मैं ने सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुना है कि जो कोई अपनी ख़्वाहिश की चीज़ तर्क कर देता है, अल्लाह पाक उस की बख़्शिश फ़रमा देता है। (احیاء العلوم، 3/114 ملخصًا)

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! देखा आप ने ! सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا ने ख़्वाहिश होने के बावुजूद मछली न खाई और उसे अल्लाह की राह में दे दिया। ऐ काश ! हम भी ऐसे बन जाएं कि अगर हमारे सामने हमारी पसन्दीदा चीज़ मौजूद हो, उस को देख कर हमारा दिल भी ललचा रहा हो, त़बीअ़त भी उस की त़रफ़ माइल हो रही हो, उस की ख़्वाहिश भी हो लेकिन अचानक हमें येह ह़दीसे मुबारका "जो अपनी ख़्वाहिश की चीज़ तर्क कर देगा अल्लाह पाक उस की मग़्फ़िरत फ़रमा देगा।" (الکامل فی ضعفاء الرجال، 6/223 ملخصًا) याद आ जाए और हम अपनी वोह पसन्दीदा चीज़ किसी मुसलमान को या पड़ोसी को या छोटे बहन भाई को तोह़फ़े में दे दें कि घर वालों पर सदक़ा करना ज़ियादा सवाब का बाइ़स है तो اِنْ شَآءَ اللہ येह मग़्फ़िरत की बिशारत हमारे लिये भी होगी।

बद क़िस्मती से हमारी हालत इस के बरअ़क्स है, जब हम खाने के लिये बैठते हैं तो अच्छी अच्छी बोटियां अपने क़रीब कर लेते हैं, अगर अल्लाह पाक की राह में देने का इरादा भी हो तो जो खाना बच जाता है उसे उठा कर किसी ग़रीब को दे देते हैं। अफ़सोस ! हमारी ख़ैरात भी इस त़रह़ निकलती है कि जब तक खाना अपने काम का है ख़ुद रख लिया और जब ख़राब होने का ख़त़रा हुवा तो ख़ैरात कर दिया। आज कल घर घर फ्रीज मौजूद है तो जो खाना बच जाता है उसे फ्रीज में रख दिया जाता है, फिर जब उसे फ्रीज में रखे हुए दो तीन दिन गुज़र जाते हैं तो चूंकि अब इस के ज़ायक़े में थोड़ा सा फ़र्क़ आ जाता है और वोह खाने में अच्छा नहीं लगता लिहाज़ा किसी ग़रीब को दे दिया जाता है।

अल्लाह पाक हमें अपनी राह में अपनी पसन्दीदा चीज़ें सदक़ा करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمِين بِجاهِ خَاتَمِ النَّبِيّٖن صلّى الله عليه واٰله وسلّم

फ़ेहरिस्त

मज़मून	सफ़ह़ा	मज़मून	सफ़ह़ा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	01	तीसरी नसीह़त	07
अबू ज़र ग़िफ़ारी رضی اللہ عنہ का उ़म्दा ऊंट	02	पसन्दीदा बाग़ अल्लाह की राह में दे दिया	08
पहली नसीह़त	05	झुकी हुई मिस्वाक	09
दूसरी नसीह़त	05	मदीने की मछली	11

ईसार के मौज़ूअ़ पर मज़ीद मुतालआ़ करने के लिये अमीरे अहले सुन्नत का रिसाला “मदीने की मछली” मकतबतुल मदीना से हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये।

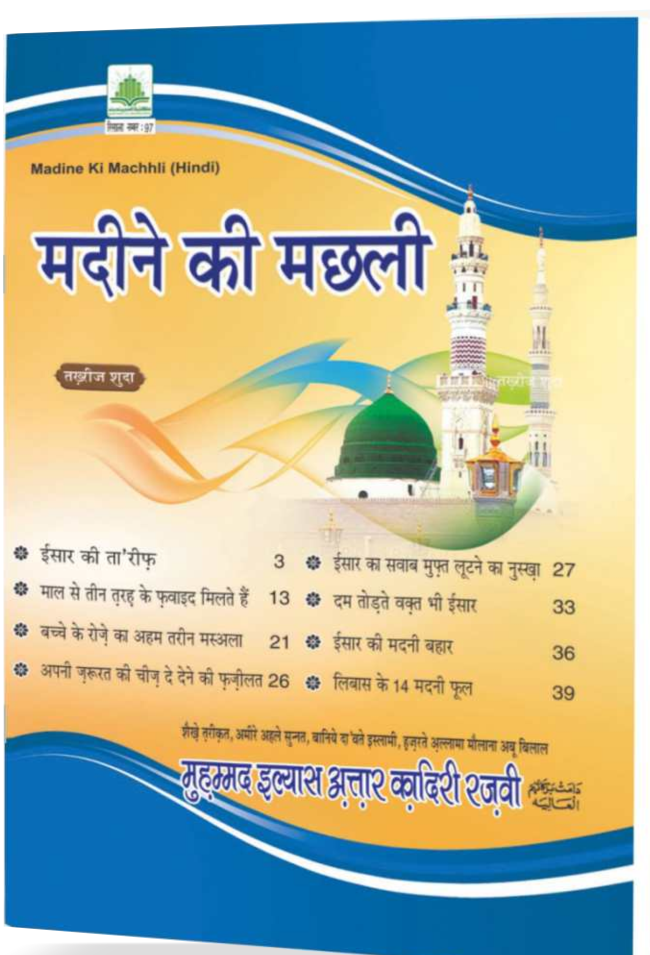

अगले हफ़्ते का रिसाला

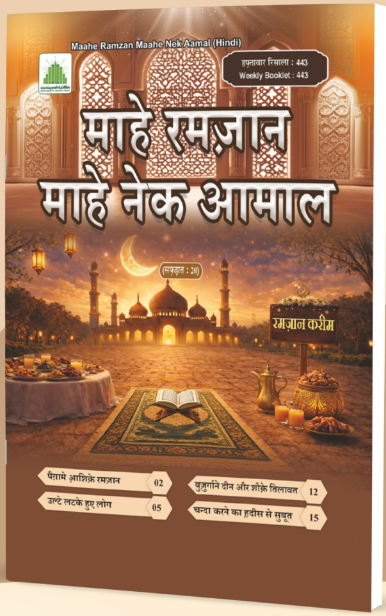

DAWATEISLAMI INDIA

FGN Channel
Dekhte Rahiye

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025